में कृष्ण द्वैपायन को व्यास कहा गया है और इन्हें वेदों का वर्गीकरण करनेवाला माना गया है—।

इन्हीं कृष्ण द्वैपायन व्यास का नाम बादरायण व्यास भी था। इन्होंने अपनी समस्त ज्ञान-साधना बदरिकाश्रम में की थी, अतः ये बादरायण के नाम से प्रसिद्ध हुए। व्यासप्रणीत 'वेदान्तसूत्र' भी 'बादरायणसूत्र' के ही नाम से लोक-विश्रुत हुआ है। इनका अन्य नाम पाराशर्य भी है। इससे ज्ञात होता है कि इनके पिता का नाम पराश था। अलबेरुनी ने भी इन्हें पराशर का पुत्र कहा है और पैल, वैशम्पायन, जैमिनि तथा सुमन्तु नामक इनके चार शिष्यों का उल्लेख किया है, जिन्होंने क्रमशः ऋग्, यजु, साम एवं अथर्ववेद का अध्ययन किया था। पाणिनिकृत 'अष्टाध्यायी' में 'भिक्षुसूत्र' के रचयिता पाराशर्य व्यास ही कहे गये हैं। 'भिक्षुसत्र' 'वेदान्तसूत्र' का ही अपर नाम है। 'महाभारत' के शान्तिपर्व में इनका निवासस्थान उत्तरापथ हिमालय बताया गया है।

व्यास जी की शिक्षा कहाँ हुई, इसका कोई विशेष विवरण प्राप्त नहीं है। पर 'वंशब्राह्मण' तथा पुराणों में इनके गुरु 'जातुकर्ण्य' कहे गए हैं। श्रीमद्भागवत के अनुसार, इनका आश्रय सरस्वती तट पर था, जो कुरुक्षेत्र से कुछ पश्चिमोत्तर रहा होगा। आधुनिक विद्वान् 'कृष्ण-द्वैपायन व्यास' तथा 'बादरायण व्यास' को भिन्न-भिन्न व्यक्ति मानकर महाभारतादि ग्रन्थ के निर्माता कृष्ण-द्वैपायन को और ब्रह्मसूत्र के प्रणेता बादरायण-व्यास को स्वीकार करते हैं। इस विचार का खण्डन करते हुए म॰ म॰ पं॰ गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी का कहना हैः ''इस पर हमारा इतना ही वक्तव्य है कि इस प्रकार का भेद मानने का कोई मूल भारतीय वाङ्मय के प्राचीन ग्रंथों में नहीं मिलता, न जाने यह भेद मानने की कल्पना आधुनिक ऐतिहासिकों ने किस आधार पर उठाई है। एक ही व्यक्ति के भिन्न-भिन्न कारणों से अनेक नाम हो सकते हैं, जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं कि इनका कृष्ण यह नाम मुख्य था। द्वीप में पैदा होने के कारण द्वैपायन शब्द भी वासुदेव कृष्णआदि से भेद करने के लिए जोड़ दिया गया। इसी प्रकार, बदरी वन में तपस्या करने के कारण बादरायण नाम भी प्रसिद्ध हुआ। जैमिनिसूत्र और वेदान्तसूत्रों में बादरायण नाम ही उल्लिखित हुआ है, यह ठीक है; किन्तु पुराणादि में भी बादरायण नाम कहीं-कहीं पाया जाता है। जैसा कि—

आख्यानैश्चाप्युपाख्यानैर्गाथाभिः कल्पशुद्धिभिः।

पुराणसंहितां चक्रे भगवान् बादरायणः।।

महाभारत के संस्करण -

विद्वानों का मत है कि वैदिक यज्ञों के अवसर पर प्राचीन आख्यानों का गायन और वर्णन होता था। इन आख्यानों में प्राचीन वीरों की गौरव गाथायें गाई जाती थीं। इनके गाने वाले सूत, बन्दी, चारण आदि होते थे। वैदिककाल से ही वीरों और महापुरुषों की यह कीर्ति-गाथायें भारतवर्ष में प्रचलित थीं। ये वीर-गाथायें ही उस इतिहास के अंश हैं, जिसकी चर्चा ब्राह्मणों और उपनिषदों में मिलती है तथा जिसे वेद के उपब हण का साधन माना जाता है। महाभारत का विशाल काव्यमय इतिहास इन्हीं प्राचीन गाथाओं की परम्पराओं में है। महाभारत के अन्तर्गत भरतवंशी वीरों के ग हयुद्ध की मूलकथा के अतिरिक्त अन्य अनेक उपाख्यान मिलते हैं। विद्वानों का मत है कि ये उपाख्यान वर्तमान महाभारत की संहिता के संकलन के पूर्व भारतवर्ष की बिखरी हुई गाथा-परम्परा में प्रचलित थे। ये उपाख्यान और गाथायें किसी एक व्यक्ति की रचना नहीं थे। इन्हें प्राचीन लोक-काव्य कहा जा सकता है। ये एक प्रकार से सार्वजनिक-साहित्यिक-सम्पत्ति के रूप में थे। महाभारत के युद्ध की घटना भी वर्तमान महाभारत संहिता के संकलन के पूर्व इन गाथाओं और गीतिओं के रूप में वर्तमान रही होगी। विन्तटनित्स के मत में यही प्राचीन वीर-गाथा वर्तमान महाभारत का आधार है। विन्तटनित्स तथा अन्य विद्वानों का मत है कि लोक-काव्य की परम्परा में महाभारत की मूलगाथा का विस्तार होता गया तथा अन्य लोक उपाख्यानों का भी उसमें सम्मिश्रण होता गया। इस प्रकार महाभारत का आकार बढ़ता गया। विन्तटनित्स का यह भी मत है कि ब्राह्मणों और पुरोहितों ने बाद में इसमें अनेक उपाख्यान जोड़ दिये।

धीरे-धीरे महाभारत में वीर-गाथाओं तथा धर्म और नीति के उपदेशों का मिश्रण और विस्तार होता गया। पश्चिमी विद्वानों के मत में वर्तमान महाभारत एक दीर्घ परम्परा का पर्यवसान है। इस प्रकार संस्कृत साहित्य के इतिहासकारों का प्रायः यह अनुमान है कि महाभारत के वर्तमान रूप का विस्तार तीन चरणों में तथा तीन संस्करणों के रूप में हुआ है। इस मत का आधार वे विद्वान वर्तमान महाभारत के अन्तर्गत मिलने वाले जय, भारत और महाभारत के तीन नामों तथा महाभारत के गायन के तीन आरम्भों में खोजते हैं। उनके अनुसार इस महाकाव्य का प्रथम संस्करण जय, द्वितीय भारत तथा त तीय महाभारत के रूप में सामने आया।

जय

महाभारत का मौलिक रूप जय के नाम से विख्यात था। ग्रन्थारम्भ में नारायण, नर था सरस्वती देवी को नमस्कार करके जिस 'जय' नामक ग्रन्थ के पठन का विधान है, वही मूल महाभारत है। वहीं यह भी लिखा हुआ है कि इसका प्राचीन नाम जय था। पाण्डव-विजय के वर्णन के कारण इसका यह अभिधान सार्थक प्रतीत होता है। आदि पर्व के प्रथम अध्याय में ही विजिगीषुओं के लिए जय नामक इतिहास सुनने का आदेश दिया गया है।

भारत

दूसरी अवस्था में इसका नाम भारत पड़ा। इसमें उपाख्यानों का समावेश नहीं था। केवल युद्ध का विस्त त वर्णन प्रधान विषय था, जो चौबीस हजार श्लोकों में निबद्ध था। इसी भारत को वैशम्पायन ने जनमेजय को पढ़कर सुनाया था—

चतुर्विंशतिसाहस्त्रीं चक्रे भारतसंहिताम्।
उपाख्यानैर्विना तावद् भारतं प्रोच्यते बुधैः।।

महाभारत

इस ग्रन्थ का यही अन्तिम रूप है, जिसे 'शतसाहस्त्री संहिता' कहा जाता है। 'हरिवंश' को मिलाकर ही श्लोक संख्या एक लाख पहुंचती है। हरिवंश को महाभारत का परिशिष्ट (खिल पर्व) माना जाता है। विक्रम से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व विरचित आश्वलायन ग ह्यसूत्र में महाभारत का उल्लेख इस बात का प्रमाण है कि महाभारत का यह रूप लगभग दो हजार वर्ष पुराना अवश्य है।

इन रूपों को तथा महाकाव्य में उपलब्ध सामग्री-वैविध्य को देखकर ही विन्टरनित्स ने कहा था कि महाभारत कोई एक व्यक्ति और एक समय की रचना नहीं है। वह उस युग का एक समूचा साहित्य है।

पश्चिमी परम्परा में दीक्षित अधिकांश भारतीय विद्वान् विन्तटनित्स के इस मत को ही मानते हैं। भारतीय परम्परा के विद्वानों में पण्डित इन्द्रनारायण द्विवेदी तथा महाभारत के दक्षिणी पाठ के सम्पादक पी॰पी॰ एस शास्त्री ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि सम्पूर्ण महाभारत वेदव्यास की ही रचना है तथा उसके तीन संस्करण नहीं हुए। उनके अनुसार जय, भारत और महाभारत, महाभारत के तीन संस्करणों के नाम नहीं, वरन् उनके तीन पर्यायवाची नाम हैं। उनके अनुसार चौबीस हजार की श्लोक संख्या उपाख्यानों से रहित महाभारत की है तथा छियत्तर हजार श्लोकों में उपाख्यान हैं।

ऐतिहासिक ओर वैज्ञानिक द ष्टि से विन्तटनित्स आदि पश्चिमी विद्वानों के अभिमत के आधार बहुत कुछ संगत प्रतीत होते हैं। फिर भी यह विचारणीय है कि भारतीय परम्परा में अत्यन्त प्राचीनकाल से महाभारत सतसाहस्त्री संहिता के नाम से विख्यात है तथा महर्षि वेदव्यास की कृति मानी जाती है। और महाभारत में ही वैशम्पायन और सौति को उसका कर्त्ता नहीं, वरन् अनुगायक माना गया है। अतः मुख्यरूप से महाभारत को वेदव्यास की कृति मानना ही उचित है। भारतीय मुनियों और विद्वानों ने अकेले ही विशाल आकार के ग्रन्थ रचे हैं। एक लाख श्लोकों के महाभारत की रचना

भी उनके लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं। प्राचीन वीर-गाथायें महाभारत की पूर्ववर्ती हो सकती हैं, किन्तु महाभारत उनका संकलन मात्र नहीं है। अपने मूल रूप में महाभारत सम्भवतः महर्षि वेदव्यास की ही रचना है। मौखिक गायन के इस लोक-काव्य में अनुगायकों के द्वारा कुछ परिवर्धन होना स्वाभाविक है। किन्तु इन परिवर्धनों को महाभारत के संस्करण मााना आवश्यक नहीं है। ब्राह्मणों और क्षत्रियों के विरोध की कल्पना पश्चिमी विद्वानों का आग्रह मात्र है। इतिहास में इस विरोध के कोई प्रमाण नहीं मिलते। वीर-गाथा धर्म, नीति आदि के विविध विषयों का सम्मिश्रण भारतीय परम्परा में एक लेखक के द्वारा भी सम्भव है। विषय और शैली की विविधता भी आवश्यक रूप से महाभारत में कई लेखकों के योग को प्रमाणित नहीं करती। तार्किक द ष्टि से महाभारत के अनेक लेखकों की कल्पना उतनी ही संदिग्ध है, जितनी कि उसके एक-लेखक की कृति होने की कल्पना है। महाभारत की परम्परा और उसकी सम्पूर्ण योजना को देखते हुए उसके मौलिक रूप और उसके अधिकतम अंश को वेदव्यास की कृति मानना अनुचित नहीं है। व्यक्तियों, स्थानों, ग्रन्थों आदि के पर्याय भारतवर्ष में बहुत प्रचलित हैं। संस्कृत पर्याय-बहुल भाषा है। अतः जय, भारत और महाभारत के नाम भी आवश्यक रूप से उसके तीन संस्करणों के सूचक नहीं हैं, वे एक ही ग्रन्थ के पर्याय भी हो सकते हैं।

पाठ भेद की द ष्टि से इस समय महाभारत के दो पाठ उपलब्ध होते हैं। १. उत्तरी पाठ २. दक्षिणी पाठ। इन उत्तरी और दक्षिणी पाठों के आधार पर आजकल महाभारत के मुख्य रूप से पाँच संस्करण प्रकाशित हैं। जिनमें एक है निर्णय सागर प्रेस द्वारा प्रकाशित बम्बई संस्करण। द्वितीय है चित्रशाला प्रेस द्वारा प्रकाशिल पूना संस्करण। त तीय है- गीता प्रेस संस्करण। चतुर्थ है एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता से प्रकाशित बंगीय संस्करण।

इन चारों के अतिरिक्त पाँचवा महत्त्वपूर्ण संस्करण भण्डारकर प्राच्यविद्या शोध संस्थान पूना से प्रकाशित है।

यद्यपि महाभारत के स्वाध्याय हेतु सम्पूर्ण देश में गीता प्रेस गोरखपुर का संस्करण ही अधिक प्रचलित है। सम्भवतः मूल्य आदि की द ष्टि से सुलभ होने के कारण ऐसा है। तथापि विद्वानों द्वारा शोध की द ष्टि से भण्डारकर शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित संस्करण बहु समाद त है।

महाभारत के आख्यान –

महाभारत के अनेक आख्यानों एवं विषयों को लेकर विद्वानों ने यह मन्तव्य व्यक्त किया है कि यह एक व्यक्ति की रचना न होकर कई व्यक्तियों की कृति है, परन्तु आन्तरिक प्रमाणों एवं शैली के आधार पर यह सिद्ध होता है कि इसे एकमात्र व्यास ने ही लिखा है। भाषा तथा शैली की एकरूपता इसे एक व्यक्ति की रचना सिद्ध करती है।

महाभारत में अनेक आख्यान निबद्ध हैं, जिनके स्वरूप में पर्याप्त अन्तर है। कुछ पौराणिक हैं तो कुछ नैतिक और कुछ का सम्बन्ध लोक-कथाओं से है।

(१) पौराणिक पाख्यान– ये पूरातन आख्यान बहुत रोचक और शिक्षा प्रद हैं। इस प्रकार के आख्यानों में शकुन्तलोपाख्यान, मत्स्योपाख्यान, रामोपाख्यान, शिव्युपाख्यान, साविञ्युपाख्यान, एवं नलोपख्यान प्रसिद्ध हैं।

(२) शकुन्तलो पाख्यान– इस उपाख्यान का वर्णन आदिपर्व के ७१ वें अध्याय में है। इसमें राजा दुष्यन्त एवं उनकी पत्नी शकुन्तला की मनोरम कथा वर्णित है। महाकवि कालिदास ने इसी से प्रेरणा-ग्रहण कर अपने विश्वप्रसिद्ध अभिज्ञान शाकुन्तल नामक नाटक की रचना की है।

(३) मत्स्योपाख्यान– इसका वर्णन वनपर्व के अन्तर्गत हुआ है। इसमें भगवान् के मत्स्यावतार की कथा कही गयी है। किस प्रकार प्रलय होने पर मत्स्य द्वारा मनु बचाये जाते हैं, इसी का इसमें विवरण प्रस्तुत किया गया है। इस कथा का उल्लेख 'शतपथ ब्राह्मण' में भी है।